संस्कृत ई-कंटेंट

पाठ्यांश: प्रमुख संस्कृत गद्यकार - बाणभट्ट, दण्डी एवं सुबन्धु का परिचय

कक्षा: बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

विषय: संस्कृत

पेपर कोड: A020201T (संस्कृत गद्य साहित्य)

ई-कंटेंट निर्मात्री: सपना साहू

अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस ई-कंटेंट के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी:

- संस्कृत गद्य-त्रयी के महान गद्यकारों–बाणभट्ट, दण्डी तथा सुबन्धु के जीवन, काल एवं उनकी प्रमुख कृतियों से भली-भाँति परिचित हो सकेंगे।
- शास्त्रीय काल के इन गद्यकारों की साहित्यिक शैली (रीति, गुण एवं अलंकार-विधान) का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
- कादम्बरी, दशकुमारचरितम् तथा वासवदत्ता जैसी कालजयी गद्य कृतियों के साहित्यिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व को समझ सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य में "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" (गद्य ही कवियों की वास्तविक कसौटी है) की अवधारणा का मूल्यांकन कर सकेंगे।

1. **प्रस्तावना**

संस्कृत साहित्य में यह उक्ति प्रसिद्ध है–"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" अर्थात् गद्य की रचना करना ही कवियों की योग्यता की वास्तविक परीक्षा है।

यद्यपि संस्कृत में पद्य की प्रधानता रही है, तथापि शास्त्रीय काल में संस्कृत गद्य का विकास अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा।

संस्कृत गद्य साहित्य के शास्त्रीय काल को ‘स्वर्णयुग’ कहा जाता है। इस काल में तीन महान गद्यकारों–सुबन्धु, बाणभट्ट तथा दण्डी ने अपनी असाधारण प्रतिभा, शैली एवं कल्पनाशीलता से गद्य साहित्य को समृद्ध किया। इन तीनों गद्यकारों को संस्कृत साहित्य की ‘गद्य-त्रयी’ या ‘बृहत्त्रयी’ के रूप में जाना जाता है।

2. प्रमुख गद्यकारों का विस्तृत परिचय

महाकवि सुबन्धु

सुबन्धु संस्कृत गद्य साहित्य में प्रत्यक्षरश्लेषमय (प्रत्येक अक्षर में श्लेष अलंकार) शैली के प्रवर्तक एवं अद्वितीय आचार्य माने जाते हैं।

समय / काल: ईसा की ६ठीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध (लगभग 550 - 600 ई.)। ये बाणभट्ट से पूर्ववर्ती गद्यकार हैं।

प्रसिद्ध कृति: वासवदत्ता –(कथा विधा की उत्कृष्ट रचना)।

शैली एवं रीति: गौड़ी रीति, दीर्घ समास-बहुल भाषा, श्लेष एवं विरोधाभास अलंकारों की प्रधानता।

साहित्यिक विशेषताएँ एवं योगदान:

श्लेष-चमत्कार: सुबन्धु ने अपनी रचना वासवदत्ता में स्वयं प्रतिज्ञा की है– “प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिम्” अर्थात् उनकी रचना का प्रत्येक अक्षर श्लेष अलंकार से परिपूर्ण है।

कथानक: वासवदत्ता में राजकुमार कंदर्पकेतु और राजकुमारी वासवदत्ता के स्वप्न-दर्शन से उत्पन्न प्रेम तथा उनके पुनर्मिलन की काल्पनिक कथा का सरस वर्णन है।

वर्णन-बाहुल्य: सुबन्धु की रचना में प्रकृति-वर्णन, विप्रलभ शृंगार और आलंकारिक सौंदर्य का अद्भुत समावेश है।

प्रसिद्ध उक्ति: "सरस्वतीदत्तवरप्रसादः चक्रे प्रबन्धं सुजनैकवेद्यम्। सुबन्धुर्बन्धुप्रथितं गुणाढ्यः॥"

महाकवि बाणभट्ट

बाणभट्ट संस्कृत गद्य साहित्य के निर्विवाद सम्राट एवं चक्रवर्ती गद्यकार माने जाते हैं। वे कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन (606 - 647 ई.) के सभापंडित थे।

समय / काल: सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध (सम्राट हर्षवर्धन का शासनकाल)।

प्रमुख कृतियाँ:

कादम्बरी संस्कृत साहित्य की सर्वश्रेष्ठ एवं कालजयी कथा।

हर्षचरितम् संस्कृत का प्रथम ऐतिहासिक आख्यायिका ग्रन्थ।

शैली एवं रीति: पाञ्चाली रीति (शब्द और अर्थ का संतुलित सामंजस्य), क्लिष्ट समासयुक्त तथा प्रासादिक शैली।

साहित्यिक विशेषताएँ एवं योगदान:

कथा-सौंदर्य एवं सूक्ष्म चित्रण: कादम्बरी में चन्द्रापीड-कादम्बरी तथा पुण्डरीक-महाश्वेता के तीन जन्मों के प्रेम की जटिल एवं अलौकिक कथा वर्णित है।

प्रकृति एवं पात्र-चित्रण: बाणभट्ट का प्रकृति-वर्णन (जैसे—अच्छोद सरोवर, विन्ध्याटवी) तथा मनोवैज्ञानिक पात्र-चित्रण अद्वितीय है।

शुकनासोपदेश: कादम्बरी का यह अंश व्यावहारिक जीवन, राजनीति, लक्ष्मी के मद तथा युवावस्था की असावधानी पर अत्यंत प्रभावकारी उपदेश प्रदान करता है।

प्रसिद्ध उक्ति: "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" (संपूर्ण जगत् बाण का जूठा है) तथा "पञ्चबाणस्तु बाणः" (जयदेव)।

आचार्य दण्डी

आचार्य दण्डी महान गद्यकार होने के साथ-साथ प्रसिद्ध काव्याचार्य (काव्यशास्त्री) भी थे। संस्कृत साहित्य में उनके 'पदलालित्य' की अत्यधिक प्रशंसा की गई है।

समय / काल: सातवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध अथवा आठवीं शताब्दी का प्रारम्भ (लगभग 675 - 725 ई.)।

प्रमुख कृतियाँ:

दशकुमारचरितम् (Dashakumaracharita): १० राजकुमारों के साहसिक एवं विचित्र आख्यानों की कथा।

काव्यादर्श (Kavyadarsha): प्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ।

अवन्तिसुन्दरीकथा (Avantisundarikatha): गद्यकाव्य।

शैली एवं रीति: वैदर्भी रीति (सरल, समासरहित, माधुर्य एवं प्रसाद गुण से युक्त), व्यावहारिक एवं यथार्थवादी शैली।

साहित्यिक विशेषताएँ एवं योगदान:

यथार्थवादी एवं समाजोपयोगी दृष्टिकोण: दण्डी ने तत्कालीन समाज, धूर्तता, राजनीति, चोरी एवं हास्य-व्यंग्य का जीवंत और व्यावहारिक चित्रण किया है।

पदलालित्य: मधुर शब्द-चयन, वाक्यों का सुरीला प्रवाह और सरलता दण्डी की प्रमुख विशेषता है।

ओष्ठ्य-वर्ण रहित अध्याय: दशकुमारचरितम् के 'मन्त्रगुप्तचरितम्' में राजकुमार मन्त्रगुप्त के मुख से बिना किसी ओष्ठ्य वर्ण (प, फ, ब, भ, म) का प्रयोग किए पूरा अध्याय लिखा गया है, जो उनकी भाषा-प्रभुत्व को दर्शाता है।

प्रसिद्ध उक्ति: "उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥"

4. **अभ्यास प्रश्न**

क. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

'पदलालित्य' के लिए संस्कृत साहित्य में कौन-से गद्यकार प्रसिद्ध हैं?

(क)बाणभट्ट (ख) सुबन्धु (ग) दण्डी (घ) सुश्रुत

उत्तर: (ग) दण्डी

सम्राट हर्षवर्धन के सभापंडित निम्नलिखित में से कौन थे?

(क)दण्डी (ख) बाणभट्ट (ग) सुबन्धु (घ) भास

उत्तर: (ख) बाणभट्ट

'प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध' की रचना करने का श्रेय किस गद्यकार को प्राप्त है?

(क)सुबन्धु (ख) दण्डी (ग) बाणभट्ट (घ) श्रीहर्ष

उत्तर: (क) सुबन्धु

बाणभट्ट द्वारा रचित सर्वश्रेष्ठ कथा ग्रन्थ कौन-सा है?

(क)हर्षचरितम् (ख) वासवदत्ता (ग) कादम्बरी (घ) दशकुमारचरितम्

उत्तर: (ग) कादम्बरी

'दशकुमारचरितम्' किसकी प्रसिद्ध रचना है?

(क)बाणभट्ट (ख) दण्डी (ग) सुबन्धु (घ) भास

उत्तर: (ख) दण्डी

ख. लघु उत्तरीय प्रश्न

संस्कृत गद्य-त्रयी के अन्तर्गत आने वाले तीनों गद्यकारों के नाम लिखिए।

बाणभट्ट की दोनों प्रमुख रचनाओं के नाम एवं उनकी विधा बताइए।

'दण्डिनः पदलालित्यम्' उक्ति का क्या अर्थ है?

सुबन्धु की गद्य शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

ग. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

संस्कृत गद्य साहित्य के शास्त्रीय युग में महाकवि बाणभट्ट के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

दण्डी, बाणभट्ट एवं सुबन्धु की शैलीगत विशेषताओं का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

5. संदर्भ ग्रन्थ (References)

डॉ. बलदेव उपाध्याय - संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी।

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी - संस्कृत साहित्य का इतिहास, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, प्रयागराज।

ए. बी. कीथ - A History of Sanskrit Literature, मोतीलाल बनारसीदास।

वाचस्पति गैरोला - संस्कृत साहित्य का इतिहास